स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग 1

द्वितीय सेमेस्टर

दिनांक- 2[illegible]

भ्रमरगीत का आधार एवं कथा सूत्र

विद्यार्थियों कल हमलोगों ने जाना कि सूरदास कौन थे, उनका महत्व क्या है, उन्होंने जिस रचना का सृजन किया है उसका औचित्य क्या है। आज हमलोग जानेंगे कि भ्रमरगीत का आधार क्या और इस रचना में किस कथा का उल्लेख किया गया है।

आज मैं बता दूँ कि सूरदास जी ने भ्रमरगीत की कल्पना नहीं की थी। जिस घटना की चर्चा इसमें की गयी है उसका उल्लेख पौराणिक ग्रंथ 'श्रीमद् भागवतमहापुराण' में की गयी है।

मैं बता दूँ कि श्रीमद् भागवत महापुराण के दशम स्कन्ध के छियालिसवें और सैंतालिसवें अध्याय में भ्रमरगीत की कथा का उल्लेख किया गया है।

कथा है कि श्रीकृष्ण का बचपन तो नंद और यशोदा के साथ गोकुल में बीता और वहाँ रहकर

उन्होंने गोप और गोपियों के साथ प्रेममय वातावरण का सृजन किया। राधा कृष्ण की प्रेमगाथा तो अमर है जिसका नाम बड़ी भक्ति के साथ लोग लेते हैं। राधा के साथ ही वहाँ की सारी गोपियाँ कृष्ण के प्रेम में पगी हुई थीं और वहाँ के गोप भी उनके अनन्य सखा थे। कंस के बुलाने पर कृष्ण मथुरा चले चले जाते हैं और कंसवध के बाद वे वहीं रह जाते हैं। मथुरा में कृष्ण के एक और मित्र बनते हैं जिनका नाम था उद्धव। पहले वाले सखा और सखियाँ तो कृष्ण को अपना सबकुछ समझते परंतु उद्धव का विचार कुछ दूसरा था। वे कृष्ण को एक महापुरुष मानते थे परंतु उन्हें विष्णु के पूर्णावतार साकार ईश्वर नहीं मानते थे। उद्धव भगवान को निराकार मानते थे और उन्हें अपने ब्रह्मविचार का बहुत अधिक घमण्ड था। गोपियों को छोड़कर आने के लिए कृष्ण को डाँटा करते थे। इन बातों से परेशान होकर कृष्ण ने

सोचा कि क्यों न उद्धव जी के ज्ञान के घमण्ड को तोड़ा जाये। उन्होंने एक पत्र गोकुल में रहने वाले अपने माता-पिता और सखा तथा सखियों के पास भेजा।

उद्धव कृष्ण के साथ रहते-रहते उन्हीं के जैसा पहनने लगे थे और रंग रूप तो उनका भी कृष्ण के जैसा था ही। कृष्ण का पत्र लेकर उद्धव गोकुल की ओर चल पड़ते हैं। जब वे गाँव की सीमा में पहुँचते हैं तो दूर से ही देखकर गोप-गोपियाँ उन्हें कृष्ण समझने लगते हैं और सब के सब बाहर निकल पड़ते हैं परंतु जैसे ही उद्धव लोगों के पास पहुँचते हैं लोग उन्हें पहचान जाते हैं और उनसे उनके आने का कारण पूछते हैं। उद्धव पहले तो श्रीकृष्ण का कुशल सबको सुनाते हैं फिर अपना उपदेश उन्हें सुनाने लगते हैं। उनकी मान्यता है कि ईश्वर निराकार है और उनके कोई माता पिता

31 1 2
3 4 5 6 7 8 9
10 11 12 13 14 15 16
17 18 19 20 21 22 23
24 25 26 27 28 29 30
M T W T F S S
14 MAR

और सखा-सखीन ही होते हैं। कृष्ण तो सामान्य आदमी है उन्हें सब भूल जाओ और निराकार ईश्वर की भक्ति करो, उनसे प्रेम करो तो जीवन सफल हो जाये।

उद्धव की ये बातें सुनकर गोपियाँ अचम्भित हो जाती है क्योंकि वो सभी श्रीकृष्ण में बचपन से ही ईश्वरत्व को अनुभूत कर चुके हैं। वे उद्धव की बातों का उत्तर देना चाहती हैं परंतु एक अनजाने पुरुष के आगे कुछ बोलने से सकुचाती हैं। उसी समय एक भौंरा उड़ता हुआ उद्धव की ओर से गोपियों के पैरों पर बैठने का प्रयास करता है और गुनगुनाते हुए उड़ जाता है,

गोपियाँ देखती हैं कि भौंरे का रंग काला है और उद्धव जी का रंग भी काला है साथ ही कृष्ण का रंग भी काला ही है। कृष्ण का वस्त्र पीला है, उद्धव का वस्त्र भी पीला है और भौंरे के पंख का रंग भी पीला है। कृष्ण के होठ लाल हैं, उद्धव के होठ भी

2014

14
1 2 3 4 5
6 7 8 9 10 11 12
13 14 15 16 17 18 19
20 21 22 23 24 25 26
27 28 29 30 31
T W T F S S

लाल है और भौरें का मुँह भी लाल ही है। तीनों में एक अद्भुत साम्य देखने को मिलता। अब गोपियों को अपनी बात कहने का सहारा भौंरा प्रतीक रूप मे मिल जाता है। उद्धव के प्रत्येक बातों का जवाब वो देती है पर सम्बोधन भौंरे को करती हैं। इसी प्रक्रिया का नाम भ्रमर-गीत है।

छात्रों अब सारी बातें स्पष्ट हो गयी है और अगले दिन से सूरदास के उन पदों को हमलोग देखेंगे और अनुभव करेंगे कि क्यों इस रचना का नाम भ्रमरगीत पड़ा है।

धन्यवाद

कुमार रजनीकान्त रंजन
२४।४।२०२१
24-11-2020